मोबाइल ऑक्सिजन तो SMS लाइफलाइन

जेब में पड़ा मोबाइल अगर हर 15 मिनट में बीप-बीप न करे तो अधूरापन लगने लगता है। दूरी घटाकर लोगों को करीब लाने वाला यह डिवाइस अब ऑक्सिजन जितना ही जरूरी लगने लगा है। हालांकि हेल्थ पर होने वाले नुकसानों को अगर छोड़ दें तो ये सबसे ज्यादा सिरदर्द तब करता है जब अनचाही कॉल्स और एसएमएस की लाइन लग जाती है। ट्राई ने इन पर 27 सितंबर 2011 से लगाम लगाई। जहां तक टेलिमार्केटिंग कंपनियों की ओर से आने वाली अनचाही कॉल्स और एसएमएस की बात है तो लोगों ने राहत महसूस की है, लेकिन एक दिन में 100 एसएमएस का नियम पब्लिक को ज्यादा रास नहीं आया। सस्ते रीचार्ज कूपन के जरिए दिन भर सैकड़ों फ्री एसएमएस करने वाले युवा खासकर इसे नापसंद कर रहे हैं। 'टुडेज चाणक्या' के देशभर में कराए गए सर्वे से ये बातें सामने आईं। दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, बिहार तमिलनाडु, एमपी, छत्तीसगढ़, केरल, पंजाब, हरियाणा, असम हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात और उड़ीसा जैसे राज्यों के 18 साल से अधिक उम्र के 4875 लोगों के बीच सर्वे कराया गया। इसमें हर तबके के लोग शामिल किए गए हैं। आइए एक नजर डालें इनकी राय पर –

क्या आप मोबाइल के बिना रह सकते हैं?

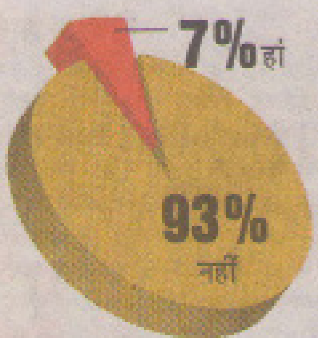

आपको क्या ज्यादा परेशान करता था?

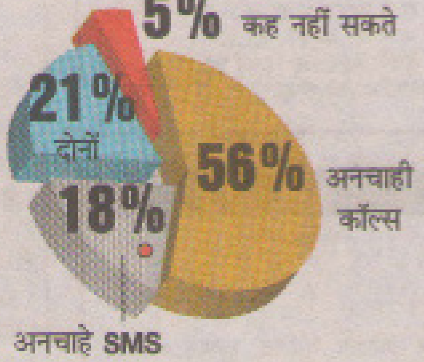

टेलिमार्केटिंग कॉल्स के नंबरों की शुरुआत 140 से होगी ताकि यह पता चल सके कि कॉल कहां से है – क्या यह सही कदम है?

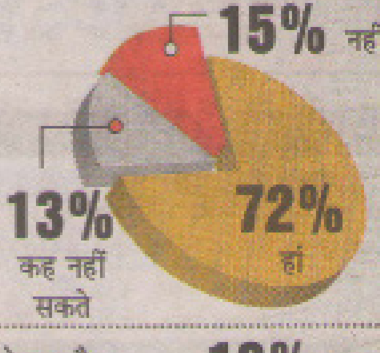

100 एसएमएस प्रतिदिन की लिमिट सही है या नहीं?

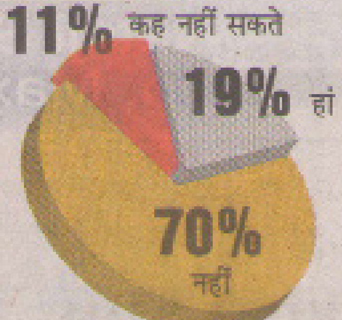

प्रमोशनल मैसेजेस की कैटिगरी काफी हैं?

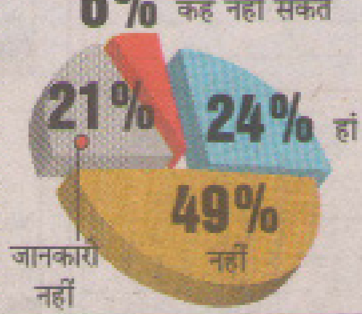
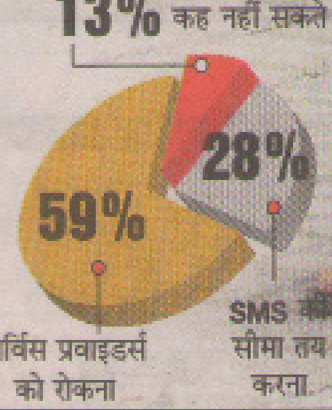
क्या बेहतर है – एसएमएस भेजने पर लिमिट तय करना या मोबाइल सर्विस प्रवाइडर्स से सस्ते एसएमएस पैकेज या रेट पर रोक लगाने के लिए कहना?